om-20a_Page 1 and 2 1/20/2014 7:58 PM Page 8

कथा सरिता

द्रोपदी ने किया पुत्रों के हत्यारे को क्षमा

महाभारत का एक प्रसंग है। द्रोपदी के पाँच पुत्र एक रात सो रहे थे। युद्ध में अश्वत्थामा के पिता द्रोणाचार्य द्रोपदी के भाई धृष्टधुम्न के हाथों वीरगति को प्राप्त हुए थे। अत: प्रतिहिंसा से भरे अश्वत्थामा पांडवों के शिविर में घुसे और द्रोपदी के पाँचो पुत्रों को मार डाला। अपने पुत्रों को मृत देखकर द्रोपदी विलाप करने लगी।

पांडवों के हृदय प्रतिशोध की ज्वाला में जलने लगे। अर्जुन ने अश्वत्थामा को पकड़ लिया। उसने द्रोपदी से कहा, 'तुम्हारा अपराधी सामने खड़ा है। तुम जो बोलोगी, वही दण्ड इसे दिया जाएगा।' हालांकि द्रोपदी अपने पुत्रों के अवसान से दु:ख में डूबी हुई थी और क्रोध भी कम नहीं था, किंतु अश्वत्थामा को देखकर उनके हृदय में माँ की ममता उमड़ आई। उनका क्रोध शांत हो गया। वो बोलीं, 'आर्य! इन्हें छोड़ दीजिए। इनके प्राण लेने से मुझे मेरे पुत्र वापस नहीं मिल जाएंगे।' द्रोपदी के उत्तर से हैरान अर्जुन ने कहा, 'यह तुम्हारे पुत्रों का हत्यारा है। क्या इसे दण्ड देने से तुम्हें शान्ति नहीं मिलेगी?'

तब द्रोपदी बोलीं, नहीं आर्य! ये मेरे अपराधी अवश्य हैं, किंतु किसी माँ के बेटे भी हैं। जिस तरह मैं अपने पुत्रों की मृत्यु से शोक सागर में डूबी हूँ, उसी प्रकार इनके मरने से गुरु पत्नी को बहुत चोट पहुंचेगी। मैं माँ हूँ और इसलिए किसी दूसरी माँ को दु:खी करना नहीं चाहती। मैं इन्हें क्षमा करती हूँ और आप लोग भी ऐसा ही करें।' पांडवों ने अश्वत्थामा को छोड़ दिया। क्षमा पाकर उन्हें घोर पश्चाताप हुआ। वे सिर झुकाए वहाँ से चले गए। दण्ड, अपराधी में विपरीत सोच भरता है, जबकि क्षमा से उसे पछतावा होता है और वह सुधार की राह पर बढ़ता है। अत: अपने स्वभाव में क्षमा को स्थान देना चाहिए।

परमात्म समभाव में घटी अनुभूति

एक घने जंगल में ईश्वर को पूर्णत: समर्पित एक संत सभी बाह्य आडंबरों से मुक्त सादगी का जीवन व्यतीत करते थे। वे प्रत्येक शाम आसपास के ग्रामीणों को उपदेश देते। उन्हें सुनकर ग्रामीण अपने जीवन को सुधारने का प्रयत्न करते। एक दिन एक शिक्षित युवक संत के पास आया। उसने संत को प्रणाम कर अपनी जिज्ञासा रखी, गुरुजी! आप ईश्वर की बात करते हैं। क्या आपने ईश्वर के दर्शन किए हैं, जो आप साधिकार इस विषय पर इतना कुछ कह पाते है?'

संत ने कुछ नहीं कहा और स्नेहपूर्वक उसके सिर पर हाथ फेर दिया। युवक ने समझा कि संत के पास मेरे प्रश्न का उत्तर नहीं है। फिर उन्होंने कहा, 'आओ हम कुछ देर यहां के बगीचे में घूमें।' बगीचे में गुलाब और रजनीगंधा के सुगंधित फूल लगे थे। युवक बोला, 'गुरुजी! इन फूलों की सुगंध से सारा वातावरण महक रहा है।' संत ने कहा, 'वत्स! तुम ठीक कहते हो, किंतु एक बात बताओ कि यह सुगंध तुम्हें दिखाई दे रही है?' युवक बोला-जी नहीं। सुगंध तो अनुभव की जाती है। तब संत ने कहा-'बस यही तुम्हारे प्रश्न का उत्तर है। तुम्हारे शरीर में जब कभी कहीं चोट लगती है, तो दर्द होता है। क्या इस दर्द को तुम देख सकते हो?' युवक बोला-'नहीं, वह भी अनुभव ही होता है।' संत ने अंतिम रूप से युवक की समस्या का समाधान करते हुए कहा-'आत्मा और परमात्मा के साथ भी यही बात है। आत्मा को परमात्मा की अनुभूति के द्वारा उसका साक्षात्कार होता है, न कि स्थूल नेत्रों से।' युवक अब पूर्णत: संतुष्ट था। संत का आभार मानते हुए वह चला गया। परमात्मा सदैव अनुभूति के स्तर पर ही घटता है और यह घटना तब होती है, जबकि मन पूर्णत: निर्लिप्त तथा समभाव को प्राप्त हो चुका हो।

राजकुमार ने जानी कर्म की महत्ता

एक राजा ने अपने पुरुषार्थ से राज्य को समृद्ध बना दिया था। राज्य में प्रजा बड़ी सुखी थी क्योंकि वह प्रत्येक वर्ग के हितों को ध्यान में रखकर काम करता था। जब राजा वृद्ध हुआ तो उसे योग्य उत्तराधिकारी की चिंता सताने लगी क्योंकि उसे लगता था कि योग्य उत्तराधिकारी के बिना सुव्यवस्था, अव्यवस्था में बदल जाएगी और प्रजा की परेशानी बढ़ जाएगी। हालांकि राजा का एक बेटा था, किंतु वह अत्यधिक आलसी और कर्महीन था। वह स्वयं को मालिक समझता और शेष सभी को अपना गुलाम। यह अहंकार उसके आचरण में सदैव झलकता था। राजा उसे सुधारने के उद्देश्य से एक साधु के आश्रम में छोड़ आया। साधु ने अगले ही दिन राजकुमार को आदेश दिया, 'वत्स! यहां से पांच कोस पर एक जंगल है। तुम वहां जाकर फूलों के कुछ पौधे ले आओ और उन्हें आश्रम के अहाते लगा दो।' यह सुनते ही राजकुमार को बड़ा क्रोध आया, क्योंकि उसने तो आदेश देना ही सीखा था। चूंकि उसके पिता ने साधु की बात मानने को कहा था इसलिए वह मन मारकर जंगल गया और फूलों के पौधे लाकर आश्रम में लगा दिए। राजकुमार ने उन्हें सींचा और जानवरों से बचाने के लिए उनकी रात-दिन रखवाली की। कुछ महीनों में सारा आश्रम भांति-भांति के सुंदर फूलों से खिल उठा। राजकुमार अपनी मेहनत का ऐसा फल देखकर बहुत प्रसन्न हुआ। साधु ने उसे शाबाशी देते हुए समझाया, 'वत्स! याद रखो, जो सोता है, उसका भाग्य भी सो जाता है और जो चलता है, उसका भाग्य निरंतर उसके साथ चलता है।' अब राजकुमार कर्मठ बन चुका था। राजा को अपना योग्य उत्तराधिकारी मिल गया था। कर्म, सफलता की कुंजी है। अत: सदैव कर्मरत रहना चाहिए।

संकट में मिली सहायता ही प्रभु दर्शन

परमात्मा से मिलने का मार्ग दिखाया संत सादिक ने। वे एक बहुत बड़े सूफी संत थे। एक दिन एक आदमी आकर उनसे कहने लगा, 'मैंने सुना है कि आप अल्लाहताला से एकाकार हो चुके हैं। मुझे भी उनसे मिलवा दीजिए।' यह सुनकर सादिक मुस्कुराए और बोले, 'क्या तुम्हें मालूम नहीं कि मूसा से कहा गया था कि तू मुझे नहीं देख सकता? यह ईश्वरीय वचन था जो सभी समझदार जानते हैं।' इस पर उस आदमी ने कहा, 'यह बात तो मैं जानता हूँ, किंतु एक शख्स यह भी तो कहता है कि मेरे दिल ने परवरदिगार को देखा। कोई यह भी कहता है, 'मैं उस भगवान की आराधना करूंगा, जिसके मैं दर्शन कर सकूं।' यह सुनकर सादिक ने कहा, 'इसके हाथ-पैर बांधकर नदी में डाल दो।' ऐसा ही किया गया। वह पानी में डूबने लगा। उसने चिल्ला-चिल्लाकर सहायता मांगी, किंतु कोई आगे नहीं आया। अंत में निराश होकर उसने कहा, 'या अल्लाह!' उसके इतना कहते ही सादिक ने उसे बाहर निकलवा लिया। फिर उससे प्रश्न किया, 'क्या तूने अल्लाह को देखा?' वह बोला, 'जब तक मैं दूसरों को पुकारता रहा, तब तक मैं परदे में रहा, किंतु जब अल्लाह से फरियाद की तो मेरे दिल में एक सुराक खुला।' तब संत ने उसे समझाया, 'जब तक तू दूसरों को पुकारता रहा, झूठा था। जब मूल अर्थात् परमात्मा को पुकारा तो जान बच गई। अब तू इसी सुराक की हिफाज़त कर जिससे तुझे ईश्वर का दर्शन होगा। वस्तुत: संकट में मिली सहायता ही प्रभु दर्शन है। यदि ऐसा मानकर हर अच्छे-बुरे क्षण में परमात्मा का स्मरण किया जाए तो अंतर्मन में पैदा हुआ विश्वास हमें स्वयं और ईश्वर का सत्य बोध करा देता है।

कांजी नगर-जयपुर। राजापार्क हॉस्पिटल के मालिक डॉ. अजय तथा वार्ड अध्यक्ष नाटाणी को ईश्वरीय संदेश देते हुए ब्र.कु.देविका।

कटनी-म.प्र.। चैतन्य देवियों की झाँकी के उद्घाटन अवसर पर डॉ.मनोरमा, सविता बहन तथा ब्र.कु.लक्ष्मी समूह चित्र में।

खुर्सीपार-छ.ग.। चैतन्य देवियों की झाँकी का उद्घाटन करते हुए विधायक कोरसेवाड़ा जी, ब्र.कु.अंजली, ब्र.कु.नेहा तथा अन्य समाजसेवी।

मुम्बई-मलाड। कोरेओग्राफर सरोज खान के जन्मदिन पर उन्हें गुलदस्ता भेंट करते हुए ब्र.कु.नीरजा। साथ हैं ब्र.कु.संजय।

मलकापुर। आध्यात्मिक कार्यक्रम के पश्चात् कलेक्टर कर्नल वी.के.दास, मेजर पाटिल, ब्र.कु.वंदना, ब्र.कु.संतोषी तथा एन.सी.सी.ग्रुप।

मनोहर थाना। शिक्षक दिवस के कार्यक्रम में रिटायर्ड टीचर को सम्मानित करते हुए तथा आत्म स्मृति का तिलक लगाते हुए ब्र.कु.निशा, हार पहनाते हुए प्रिंसीपल रामजीलाल, शॉल ओढ़ाते हुए सरपंच नीतिराज, श्रीफल देते हुए तहसीलदार दयाल वर्मा तथा गौशाला अध्यक्ष घनश्याम भण्डारी।

अनुकरण...

पेज 2 का शेष

के स्वरूप थे। यही कारण था जिससे कि उनके बोल में बल था। उनकी वाणी में अद्वितीय प्रभाव था। इसका मुख्य-आधार था कि वे ज्ञान के गहन चिन्तन में डूबे रहते थे। ज्ञानसागर तो उनमें प्रवेश था ही, परन्तु ज्ञान को भी उन्होंने स्वयं में समा लिया था। जो वे कहते थे, कहने से पूर्व ही वे उसका स्वरूप थे।

इसी तरह बाप समान बनने के लिए हमें भी ज्ञान का स्वरूप बनना होगा, ज्ञान चिन्तन से स्वयं में ज्ञान का बल भरना होगा। तभी हम ईश्वरीय ज्ञान को समस्त संसार में प्रख्यात कर सकेंगे।

उनमें सागर की तरह समाने की शक्ति थी

जैसे लौकिक माँ-बाप अपने बच्चों की बुराईयों को सम्पूर्णतया समाकर रखते हैं, उसका कहीं वर्णन नहीं करते। ऐसे ही ये अलौकिक पिता भी अपने बच्चों की सभी ऊँच-नीच को अन्दर ही समा लेते थे, किसी से भी उसका वर्णन नहीं करते थे। वे सब बातों को यहाँ तक समा लेते थे कि व्यवहार में भी उन बच्चों को वही स्नेह व वही सम्पूर्ण शुभभावना अनुभव होती थी। सागर की तरह सबकुछ समाकर वे सदा अडोल चित्त देखे गये।

इसी प्रकार हम भी सीखें कि जो भी कुछ देखें व सुनें, उन्हें समा लें, यहाँ-वहाँ वर्णन न करें। क्योंकि वर्णन से बातें बढ़ती हैं व वातावरण बिगड़ता है और संगठन की एकता छिन्न-भिन्न हो जाती है।

सभी को ऐसा लगता था कि बाबा हमारे हैं, मुझे ही वे सबसे अधिक प्यार करते हैं। लोग दौड़े-दौड़े उनके पास आते थे। उन्हें अपना समझकर अपना सच्चा मित्र व परम सहायक मानते थे।

वे राजा की तरह उदार थे, वे व्यर्थ खर्च भी नहीं होने देते थे और यज्ञ की सम्भाल भी सम्पूर्णतया करते थे। वे सदा गुप्त रहते थे। अपना नाम मान करने के बजाय बच्चों का नाम करते थे। बाबा पुरुषार्थ में सदा गुप्त रहे।

इसी प्रकार कदम-कदम पर उन्होंने हमें जो कर्म करके दिखाये, जो शिक्षायें दीं, जिस तरह विघ्नों से निडर रहना सिखाया, जिस तरह त्यागी व तपस्वी जीवन बनाकर दिखाया, उसका ही यदि हम हूबहू अनुकरण करेंगे तो हमें भी उन्हीं की तरह सम्पूर्ण फरिश्ता बनने में देर नहीं लगेगी और इस धरा पर अवतरित परमपिता को हम प्रत्यक्ष कर सकेंगे।